

एकलपीठ सिविल विविध कम्पनी प्रार्थना पत्र संख्या-15/2004

अन्तर्गत

(एकलपीठ कम्पनी याचिका संख्या-36/2000)

03.11.2006

माननीय न्यायाधिपति श्री शिव कुमार शर्मा

श्री अजीत कुमार शर्मा, अधिवक्ता वास्ते प्रार्थी ।

श्री बी.के. शर्मा, अधिवक्ता वास्ते प्रतिपक्षी।

श्री आर.सी.मीना, शासकीय समापक व्यक्तिशः उपस्थित।

विद्वान अधिवक्ता प्रार्थी ने पिछली तारीख पेशी पर प्रतिपक्षी की ओर से प्रस्तुत प्रार्थना पत्र के उत्तर का प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय लिया था, किन्तु उन्होंने आज कथन किया है कि प्रकरण में प्रतिपक्षी द्वारा प्रस्तुत याचिका के उत्तर का प्रत्युत्तर प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं है, क्योंकि शासकीय समापक ने एकलपीठ सिविल कम्पनी याचिका संख्या-36/2000 में एकलपीठ सिविल विविध कम्पनी प्रार्थना पत्र संख्या-54/2004 प्रस्तुत कर रखा है जिसमें निरस्तीकरण पत्र दिनांक- 26.4.1995 क्रमशः प्रदर्श- ए/1,2 व 3 को चुनौती दे रखी हैं। विद्वान अधिवक्ता श्री शर्मा के कथनानुसार इस प्रार्थना पत्र का निर्णय एकलपीठ सिविल कम्पनी याचिका संख्या-36/2000 में शासकीय समापक द्वारा प्रस्तुत एकलपीठ सिविल विविध कम्पनी प्रार्थना पत्र संख्या-54/2004 के निर्णय से अधिशाषित होगा। इसके विपरीत प्रतिपक्षी के अधिवक्ता श्री बी. के. शर्मा ने इस प्रार्थना पत्र को लम्बित रखने की प्रार्थना की।

उभय पक्ष के विद्वान अधिवक्तागण द्वारा प्रस्तुत परस्पर विरोधी तर्कों को सुना तथा विद्वान अधिवक्ता पक्षकारान द्वारा प्रस्तुत तर्कों के आधार पर अभिलेख को परीक्षित किया।

मेरे निश्चित मत से इस प्रार्थना पत्र का निस्तारण शासकीय समापक द्वारा एकलपीठ

सिविल कम्पनी याचिका संख्या-36/2000 में प्रस्तुत एकलपीठ सिविल विविध कम्पनी प्रार्थना पत्र संख्या-54/2004 के निर्णय से अधिशाषित है और जो भी निर्देश उक्त प्रार्थना पत्र को निस्तारित करते समय दिए जावेगें उनसे इस प्रार्थना पत्र में जो प्रार्थना की गई है वह पूर्णरूप से प्रभावित होगी।

अतः यह प्रार्थना पत्र इस प्रक्रम पर इस निर्देश के साथ निस्तारित किया जाता है कि इस प्रार्थना पत्र में जो प्रार्थना की गई है वह प्रतिपक्षी शासकीय समापक द्वारा एकलपीठ सिविल कम्पनी याचिका संख्या-36/2000 में प्रस्तुत किए गये प्रार्थना पत्र, एकलपीठ सिविल विविध कम्पनी प्रार्थना पत्र संख्या-54/2004 में पारित निर्णय से अधिशाषित रहेगी।

(न्या. शिव कुमार शर्मा)